

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

ISSN 2349-1906

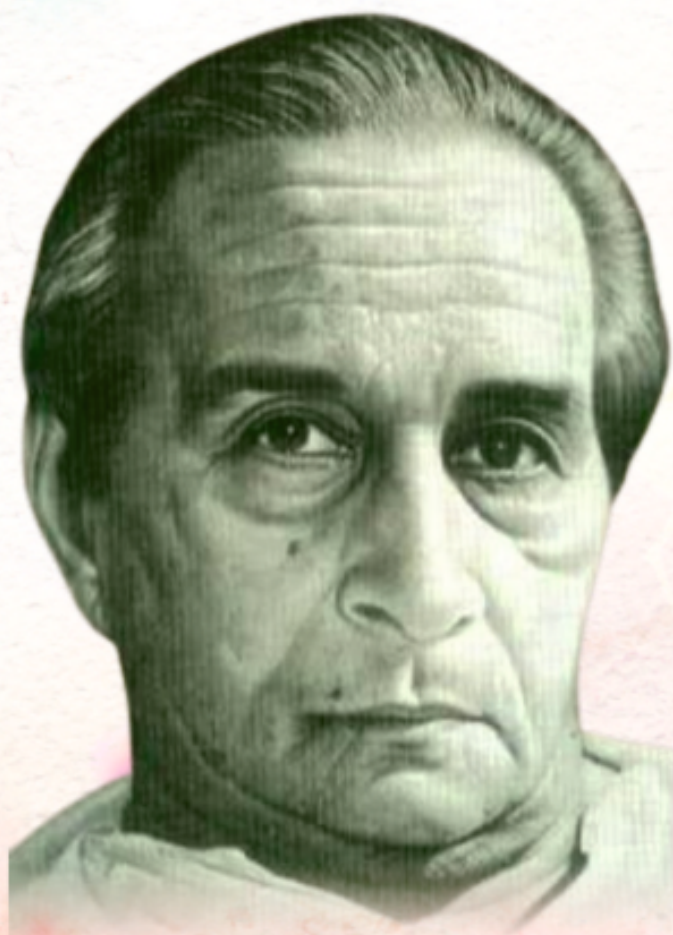
साहित्य

वर्ष 9 अंक 37 जनवरी-मार्च, 2024

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी

हरिशंकर परसाई विशेषांक



संपादक
कलानाथ मिश्र

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

हरिशंकर परसाई विशेषांक

संपादक
कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाइन खाते में डाल दिया हूँ (रेपफरेन्स नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा.....

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक :		हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
----------	--	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com

यहाँ से काटिए

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-9

अंक-37

जनवरी-मार्च, 2024

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी

संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय
(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. रवीन्द्र पाठक

डॉ. अमित कुमार मिश्रा

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी आलेख का पुनर्प्रकाशन के पूर्व संपादक की अनुमति अनिवार्य है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,

अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713/9546138889

ई-मेल : sahitayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साइट : http://www.sahityayatra.com

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैगजीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैगजीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007

2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,

पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
संस्मरणात्मक लेख	
हरिशंकर परसाई के साथ बीस बरस हरीश नवल	11
आलेख	
हरिशंकर परसाई : संवेदना और व्यंग्य-दृष्टि गणेश चंद्र राही	15
व्यंग्य के हस्ताक्षर : हरिशंकर परसाई राजेन्द्र परदेसी	28
हरिशंकर परसाई की रचनाओं में स्त्री विमर्श सुमेधा पाठक	32
व्यंग्य साहित्य के अमर पुरोधा : हरिशंकर परसाई प्रो. (डॉ.) उमाशंकर सिंह	37
लोकतांत्रिक विद्रूपता और सामाजिक यथार्थ के अनूठे कहानीकार डॉ. भारती कुमारी	42
परसाई के व्यंग्य : सामाजिक यथार्थ का वस्तुगत वैविध्य डॉ. मिथिलेश कुमार	48
परसाई का कथा साहित्य और समकालीन यथार्थ शोध लेखिका डॉ. अंजु कुमारी	71
हरिशंकर परसाई : देश और समाज का सच्चा प्रहरी डॉ. अमित कुमार मिश्रा	79

आधुनिक हिंदी व्यंग्य परम्परा के सशक्त हस्ताक्षर : हरिशंकर परसाई उर्मिला कुमारी	86
हरिशंकर परसाई के व्यंग्य में आधुनिक समाज का स्वरूप अनामिका शिल्पी	92
हिन्दी व्यंग्य के कबीर हैं; हरिशंकर परसाई सिद्धेश्वर कश्यप	104
हिन्दी व्यंग्य के आधार-शिला : हरिशंकर परसाई डॉ. करुणा पीटर 'कमल'	106
हरिशंकर परसाई वैचारिक-परिप्रेक्ष्य में डॉ. धनेश्वरी दुबे, श्रीमती अमोला कोर्राम	114
विसंगतियों पर व्यंग्य : रानी नागफनी की कहानी गोपेश कुमार साह	119
हरिशंकर परसाई कि व्यंग यात्रा प्रिया कुमारी	132
कविता थे एक हरिशंकर परसाई डॉ. अर्चना त्रिपाठी	137
सरस्वती जी की याद में राम दरस मिश्र	139
पत्र हरीश नवल जी के नाम परसाई जी का पत्र	141

सम्पादकीय

एक समय था जब होली के आते ही साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में भी बासंती बयार छा जाता था। हास्य-व्यंग्य की रचनाओं की झड़ी लग जाया करती थी। उन रचनाओं को पढ़कर, याद कर लोगों का मन भीतर से गुदगुदाने लगता था। वसंत और रंगोत्सव तो अब भी आता है किंतु साहित्य में हास्य-व्यंग्य की रचनाओं का रंग फीका पड़ गया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे मनुष्य के भीतर का रंग बाजारवाद में कहीं ना कहीं गुम हो गया है।

परसाई जी हिंदी के मूर्धन्य व्यंग्यकार हैं। उनके व्यंग्य भीतर तक हमें गुदगुदा देते हैं। चुटीले अंदाज में समाज की कुरीतियों को व्यंग्य के रंगों में रंग देते हैं। इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर 'साहित्य यात्रा' का यह अंक परसाई जी पर केंद्रित है। हालांकि हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ तो इसमें नहीं हैं किंतु परसाई जी के कृतित्व और व्यक्तित्व के माध्यम से वह सुगंध पाठकों को मिल जाएगा मुझे ऐसी आशा है।

दुःखों और अश्रुपूरित नेत्रों की व्यथा-कथा मनुष्य के भीतर की संवेदना को सहज ही जागृत करता रहा है, किन्तु आपको भीतर से गुदगुदाकर, आपकी सुप्त संवेदना को झकझोड़कर जगाने में व्यंग्य कितना असरदार और सफल है, यह आपने अवश्य महसूस किया होगा। यदि नहीं तो आपने शायद भारतीय व्यंग्य रचना को ठीक से नहीं पढ़ा है। समाज की विषमताओं, असंगतियों, विद्रूपताओं पर व्यंग्य तीक्ष्ण कटाक्ष और उसकी तिर्यक आलोचना करते हुए उसके भीतर के सफेद झूठ को परत-दर-परत बेनकाब करता है। अपने चुटीले अंदाज से वह एक ओर पाठक को भीतर ही भीतर गुदगुदाते हुए उसके अंतःकरण में दबे आक्रोश एवं कुण्ठाओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर निर्धारित सामाजिक मूल्यों, नैतिकताओं तथा यथार्थ के बीच की संगति के अभाव को रचनात्मकता और मर्म के साथ उकेरता है, जिससे वह मनुष्य की संवेदनाओं को झकझोड़कर जगाने में सफल और समर्थ हो पाता है। व्यंग्य जितना सूक्ष्म होगा, वह उतना ही तीक्ष्ण एवं प्रभावकारी भी होगा। स्थूल व्यंग्य तो मात्र हास्य की सामग्री बनकर रह जाती है। व्यंग्य की सूक्ष्मता ही हमारे भीतर प्रवेश कर हमारी संवेदना को छूती है।

बहुत कम ऐसे साहित्यकार होते हैं; जिन्हें पाठकों का इतना स्नेह मिलता है, ऐसे विरले ही साहित्यकार हुए जिनमें इतनी निर्भीकता हो, जो समाज के प्रति दायित्व निर्वहन में इतने सचेत हों, जिनके साहित्य में भारतीय समाज और शासन व्यवस्था का वास्तविक रूप बिना लाग-लपेट के व्यंग्य की बानगी के साथ अभिव्यक्त हुआ हो। कहानी, निबंध के